राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
माध्यमिक पाठ्यक्रम : हिंदुस्तानी संगीत
पाठ 5 : हिंदुस्तानी संगीत की स्वर-लिपि पद्धति
कार्यपत्रक - 5

1. संगीत का लिखित स्वरूप स्वर लिपि कहलाता है। स्वर लिपि तथा किसी भाषा की लिपि के मध्य समानतायें लिखिए ।

2. वैदिक काल में स्वर लिपि के विकास की व्याख्या कीजिये।

3. मतंग मुनि के बृहद्देशी के अनुसार लघु काल दर्शाता हुआ उदाहरण दीजिये।

4. तार सप्तक के 'म' को संगीत रत्नाकर के अनुसार लिखिए ।

5. 'पं.विष्णु नारायण भातखंडे की स्वर लिपि पद्धति आधुनिक युग में सर्वाधिक प्रचलित है'। इस कथन का अपने शब्दों में औचित्य सिद्ध कीजिये।

6. भातखंडे स्वर लिपि पद्धति के अनुसार मंद्र सप्तक का 'ध' स्वर लिखिए ।

7. भातखंडे स्वर लिपि पद्धति के अनुसार तार सप्तक का 'ध' स्वर लिखिए ।

8. स्वर लिपि स्वर और ताल के अतिरिक्त मींड, कण आदि जैसे संगीत के अन्य तत्वों का भी चिन्हों के रूप में रूपांतरण करती है। भातखंडे स्वर लिपि पद्धति के अनुसार 'प' स्वर से लेकर 'ग' स्वर तक मींड दर्शायें।

9. भातखंडे पद्धति के अनुसार (प) चिन्ह के द्वारा दर्शाये जाने वाले स्वर लिखिए ।

10. 'स्वर लिपि का उद्देश्य ख़याल, ध्रुपद, ठुमरी आदि की रचनाओं का संरक्षण है'। इस वाक्य का औचित्य अपने शब्दों में सिद्ध कीजिये ।